पाठ 17

सतवन्तिन गाय बहुला

41VEYK

पाठ परिचय– सच बोले म सौ हाथी के बल होथे। फेर अपन वचन के पूरा करइया मन सबो के मन ल जीत लेथें। ए पाठ म सतवंतिन गाय बहुला ह कइसे अपन अउ अपन बछरू के परान ल बचइस, तेनला बताय गेहे।

एक ठन गाय रहिस। ओकर नाँव रहिस बहुला। ओहा सत के मनइया अउ अपन बात के पक्का रहिस।

एक दिन के बात आय। बहुला जंगल म मगन होके चरत रहिस। चरते–चरत ओहा बघवा के माड़ा कोती चल दिस। उदुप ले एक ठन बघवा ओकर आघू म आगे। साँगर–मोंगर गाय ल देख के बघवा के लार चुहे लगिस। मने मन ओहा गुने लगिस के आज पेट भर के माँस खाय बर मिलही।

शिक्षण संकेत–लोककथा ल हावभाव के संग सुनावव। लइका मन ल एक–एक अनुच्छेद पढ़ावव। ओकर हिज्जा म ध्यान देवव। पढ़त बेरा विराम चिनहा मन के ध्यान रखव।

बघवा गरज के कहिस– ''ऐ गइया, ठाढ़ हो जा! मैं ह तोला खाहँव?''

बघवा देख के बहुला ल थोरको डर नइ लागिस, फेर ओला अपन नानकन पिला के सुरता आइस। ओ हर हाथ जोर के बघवा ले विनती करिस– ''हे जंगल के राजा! तैं आज मोला झन खा। मैं एक बेर अपन लेवइ लइका ले मिल के आ जथँव, तहाँ ले तैं मोला खा लेबे।''

बघवा कहिस– ''तैं मोर खाजी अस। मैं कइसे तोर बात ल पतिया लँव? त बहुला कहिस– ''मैं अपन बचन ल टोरहूँ त सोझ नरक म जाहूँ।''

बघवा अपन मन म विचार करिस–एक बखत देखे जाय, ए गाय ह कहत हे, तइसे करथे के नहीं, अइसन विचार करके बघवा गाय ल कहिस– ''ले जा भइ, अपन लइका ल दूध पिया के आव। मैं इही मेर तोला अगोरत बइठे रइहूँ।''

बहुला अपन घर लहुट गे अउ अपन पिला ल बहुत मया करे लगिस। वो हा अपन पिला ल कहिस– ''ले आखिरी बेर दूध पी ले बेटा।''

बछरू पूछे लगिस, ''काबर तैं अइसने काहत हस दाई? तोर मुँह घलो उतरे कस दिखत हे।'' बहुला ह सबे बात ल पिला ल बताइस। पिला ह अपन महतारी ल कहिस– ''तैं कइसे वचन देके आ गेस। तोला मोर थोरको सुरता नइ अइस ? अब महूँ तोर संग जाहूँ।''

बहुला अपन पिला ल बहुत समझाइस अउ कहिस– ''मैं तोला अपन महतारी करा छोड़ देथँव। वो हर तोला पोंसही–पालही।'' फेर ओकर पिला नइ मानिस अउ अपन महतारी के संगे–संग जंगल म पहुँचगे।

बघवा ह गाय ल अगोरत बइठे रहय। बहुला ह अपन पिला संग बघवा के आगू म आके ठाढ़ होगे। पिला ल देख के बघवा कहिस– ''ये नानकन बछरू ल तैं काबर संग म लाने हस? अब मैं एकर का करहूँ?'' बघवा के बात ल सुनके बछरू आगू आके कहिस– ''जै जोहार ममा! मैं अपन महतारी ल छोड़ के कहाँ जाहूँ? मँय हर तो बिन मारे मर जहूँ। तेकर ले तँय मोला खाले अउ मोर महतारी ल छोंड दे। मोला खाये के बाद तैं का करबे तेला तैं जान। फेर मोर महतारी ल झन खा।''

बछरू के बात ल सुनके बघवा अकबकागे। कोन ल खावँव, कोन ल बचावँव। ओकर मन पसीज गे। कतेक सतवन्तिन हे ए गाय हर अउ ओकर ले आगू तो ओकर बछरू हावय जउन अपन महतारी के बल्दा म अपन प्राण ल देबर तैयार हे। अउ गाय घलो अपन वचन ल निभाये बर अपन प्राण के चिन्ता नइ करिस। जब करिस ते अपन पिला के फिकर करिस।

बघवा के मन म दुनों के खातिर बड़ आदर के भाव पैदा होगे। अउ लेवइ हर ओला ममा कहिके चतुरइ देखा दिस। अब भाँचा के दाई हर तो बहिनी होगे। अपन बहिनी ल कोन खाही? अइसे विचार करके ओहर बहुला ल कहिस ''ले जा भई ! तुमन तो मोर हिरदे ल जीत डारेव! मैं तुम दुनों ल नइ खावँव। भगवान हर मोर पेट बर घलो काँही दूसर जोखा करे होही।'' ओहा जंगल डाहर चल दिस।

सतवन्तिन गाय बहुला ह सत के बल म अपन अउ बछरू दुनो के प्राण ल बचइस।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

सत	=	सत्य
मगन	=	खुश
माड़ा	=	माँद (शेर के रहने का स्थान)
उदुप ले	=	अचानक
साँगर–मोंगर	=	हष्ट–पुष्ट
पिला	=	छोटा बच्चा, शिशु
लेवइ	=	गाय का छोटा बच्चा जो दूध पर आश्रित हो
खाजी	=	खाने की वस्तु, भोजन (जेवन)

सोझ	=	सीधा
बखत	=	बार
अगोरा	=	प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना, बाट जोहना
महतारी	=	माता
ठाढ़ होना	=	खड़े होना
अकबकाना	=	अचरज में पड़ना, आश्चर्य चकित होना
आदर	=	सम्मान
जोखा	=	उपाय
सुरता	=	याद
सतवन्तिन	=	सच बोलने वाली

प्रश्न अउ अभ्यास–

बोध प्रश्न–

कक्षा ल दू दल म बाँट के मुँहअखरा प्रश्न पूछव। कुछ प्रश्न अइसे हो सकत हे–

क. बहुला गाय अउ बघवा के भेंट कोन मेर होइस ?

ख. बघवा के मन काबर पसीज गे ?

लइका मन के प्रश्नोत्तर के बाद गुरुजी घलोक मुँहअखरा प्रश्न पूछँय।

प्रश्न 1. खाल्हे म लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. बहुला गाय कोन मेर रहिस ?

ख. बहुला गाय कइसन रहिस ?

ग. गाय ल आघू म देख के बघवा का सोचे लगिस ?

घ. बहुला गाय के पिला ल देख के बघवा का कहिस ?

प्रश्न 2. कोन ह कोन ल कहिस ?

1. ''ए गइया! ठाढ़ हो जा, मैं ह तोला खाहँव।''

2. "हे जंगल के राजा तैं आज मोला झन खा।"

3. "जै जोहार ममा ! मैं अपन महतारी ल छोंड़ के कहाँ जाहूँ ?"

4. "ले जा भई! तुमन तो मोर हिरदे ल जीत डारेव। "

प्रश्न 3. तुमन ल मनपसंद काम करे ले कोनो छेंकही, अउ बाधा पहुँचाही त तुमन का करहू ? लिखव।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

गतिविधि–

कक्षा के दुनो दल शब्द के अर्थ अउ ओकर वाक्य प्रयोग करे के गतिविधि करँय।

इहाँ हमन सीखबो– जानबो–

मुहावरा मन के मायने लिखना। आदर सूचक शब्द लिखना, मात्रा ज्ञान प्रश्न वाचक वाक्य मन ल जानबो।

प्रश्न 1. सही जोड़ी बनावव अउ लिखव–

जइसे– माइ – पिला

माड़ा – पठरू

कोठा – बघवा

छेरी – दुहना

दूध – गोर्रा

प्रश्न 2. खाल्हे म लिखाय मुहावरा मन के मायने लिखव अउ वाक्य म प्रयोग करव–

क. लार चुचुवा गे ख. मन पसीज गे

ग. मुँह उतर गे घ. हिरदे ल जीत लेस

ङ. नरक म जाहूँ

प्रश्न 3. "साँगर–मोंगर " म संग अवइया दू शब्द हे। एकर मायने होथे 'मोठ–डाँट'। अइसने तीन शब्द लिखव।

प्रश्न 4. पाठ म आए "ा", "ि", "ी" के मात्रा वाले पाँच–पाँच शब्द मन ल छाँट के लिखव–

समझव–

क. **मैं तोर बात ल कइसे पतिया लँव ?**

ख. **मैं अपन महतारी ल छोड़ के कहाँ जाहूँ ?**

ए वाक्य मन म प्रश्न पूछे गे हे, एला प्रश्नवाचक वाक्य कहिथें । ए वाक्य मन म प्रश्नवाचक चिनहा (?) लगाय जाथे । अइसना वाक्य मन म का, काबर, कोन, काकर, कइसे, कतका, जइसे शब्द के प्रयोग करके प्रश्न पूछे जाथे ।

प्रश्न 5. अब ए वाक्य मन ल प्रश्नवाचक वाक्य म बदलव–

क. सतवन्तिन गाय ल हरियर काँदी खाये के बड़ सउँख रहिस।

ख. बघवा जंगल के राजा आय।

ग. बघवा दूसर खजानी खोजे बर चल दिस।

प्रश्न 6. ए वाक्य मन ल आदर सूचक वाक्य म बदलव–

क. तैं इहाँ का करत हस ?

ख. सुरता राखबे।

ग. इहाँ ले चले जा।

प्रश्न 7. खाल्हे के कोष्टक म लिखाए शब्द मन के प्रयोग करके खाली जघा ल भरव।

(बघवा , चतुरइ , अगोरत)

क. बघवा ह गाय ल .....बइठे रहय ।

ख. बछरू के बात ल सुनके .....अकबकागे।

ग. लेवइ ह बघवा ल ममा कहिके .....देखाइस।

रचना–

प्रश्न 1. ए वर्ग पहेली म आठ जंगली जनावर मन के नाम लुकाय हे। ओकर मन के नाव खोज के लिखव–

बि	ला	व	र	भा	री
को	हा	सि	बा	लू	ज
लि	बें	द	रा	वा	क
हा	थी	ल	चि	पी	ब
बें	स	का	म	त	घ
क	न	हि	र	ना	वा

योग्यता विस्तार–

- अइसन आवाज के सूची बनावव जेला सुन के कान मुँदे ल पर जथे। जइसे– बादर के गरजना।
- ए लोककथा ल हाव–भाव के साथ कक्षा म सुनावव।
- बकेना – गाय का बच्चा, जो दूध पीने के साथ–साथ चारा भी खाता हो।
- 'बघवा' के अउ कोनो दूसर कहानी खोज के कक्षा मे सुनावव।

425B18